



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
श्रीएकरसानन्द-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः
मैनपुरी-उत्तरप्रदेशः



इत्यनयोः संयुक्तोपक्रमे समायोज्यमाना
द्विदिवसीया राष्ट्रीयसंगोष्ठी
(19 एवं 20 फरवरी 2026)

विषयः - भारतीयज्ञानपरम्परायां मोक्षस्वरूपविमर्शः



महामण्डलेश्वरः
श्रीस्वामिहरिहरानन्दसरस्वतीजी महाराजः
मातृसंस्थाप्रमुखः,
श्रीएकरसानन्द-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः
मैनपुरी (उ.प्र.)



प्रो.श्रीनिवासवरखेडी
कुलपतिः,
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
नवदेहली



प्रो.शिवशंकरमिश्रः
प्रबन्धसमिति-अध्यक्षः, कुलपतिः,
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिक-
विश्वविद्यालयः, उज्जैनम्



प्रो. आर.जी. मुरलीकृष्णः
कुलसचिवः,
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
नवदेहली



प्रो.कुलदीपशर्मा
आदर्शप्रभारी,
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
नवदेहली



प्रो.रामबदनपाण्डेयः
प्राचार्यः,
श्रीएकरसानन्द-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः
मैनपुरी (उ.प्र.)

समुद्घाटनम्
(19/02/2026)
पूर्वाह्ने 11 वादने

सम्पूर्तिः
(20/02/2026)
अपराह्ने 04:00 वादनतः

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय जीवन के चतुर्विध पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर समाश्रित है। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर हमारी प्राचीन ज्ञान परम्परा अरण्यों में रहकर ऋषियों ने विकसित की। हम भारतवासी अपने विभिन्न कर्तव्यों का पालन करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होने की कामना करते हैं। कहा भी गया है “सा विद्या या विमुक्तये” अतः शास्त्रों में वर्णित मुक्ति या मोक्ष के स्वरूप एवं साधनों को ऋषियों ने विभिन्न दृष्टियों से व्याख्यायित किया है।

जीवन का सर्वांगीण विकास प्रथम तीन पुरुषार्थ के अनन्तर उसकी पूर्ति अन्तिम चरण मोक्ष के रूप में होती है। मोक्ष के शास्त्रीय एवं अलौकिक स्वरूपों की विशद विवेचना भारतीय ज्ञानमनीषा का उत्स है। इसकी पुनर्मीमांसा तथा प्रासंगिकता सुनिश्चित करना ही संगोष्ठी का ध्येय है।

इसी पर गहन विमर्श हेतु 19 एवं 20 फरवरी 2026 को भारतीय परम्परा में मोक्ष के विभिन्न स्वरूप तथा आधुनिक जीवन में उसकी उपादेयता पर विमर्श हेतु निम्नांकित विषयों के अनुसार अथवा यथा अभिरुचि विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत करने हेतु राष्ट्रीय संगोष्ठी में सादर उपस्थित होकर सहभागिता सुनिश्चित करें एवं संगोष्ठी को सफल बनायें।

उपविषय

1. वेदों में मोक्ष का स्वरूप।
2. उपनिषदों में मोक्षस्वरूप।
3. स्मृतिग्रन्थ एवं मोक्ष।
4. दर्शनों में मोक्षस्वरूप की परम्परा।
5. पुराणों में मोक्षस्वरूप की अवधारणा।
6. न्यायदर्शन में मोक्ष का स्वरूप।
7. वेदान्तदर्शन में मोक्ष का स्वरूप।
8. सांख्यदर्शन एवं मोक्ष।
9. योगदर्शन में मुक्तिमार्ग की अवधारणा।
10. ऐतिहासिक काव्यों में मोक्ष के सोपान।
11. शिक्षाशास्त्र में मोक्ष का स्वरूप।
12. साहित्यशास्त्र में मोक्ष का स्वरूप।
13. आधुनिक साहित्य में मोक्ष का स्वरूप।
14. मोक्षस्वरूप की सार्वभौमिक अवधारणा।
15. मोक्ष एक शास्त्रीय निष्कर्ष।

नोट- इस संगोष्ठी में सभी विषयों के विद्वान् प्राध्यापक, आचार्य, शोधच्छत्र तथा सामाजिक श्रद्धालुजन प्रतिभाग कर सकते हैं। इसमें संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में शोधपत्र का सार 15 फरवरी 2026 तक महाविद्यालय की ई-मेल-ekrasanand.sanskrit@gmail.com पर यूनीकोड अथवा कृतिदेव 10 में टाइप कराकर भेजें। पंजीकरण शुल्क स्थानीय प्राध्यापकों के लिए 500 रु. तथा शोधच्छत्रों के लिए 200 रु. निर्धारित है। शुल्क उद्घाटन के समय देय है। पूर्ण शोधपत्र जमा करने पर संगोष्ठी का प्रमाणपत्र प्रदान किया जायेगा। सभी आगन्तुक एवं आमंत्रित महानुभावों/अतिथियों तथा प्राध्यापकों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था की गई है।

विशेष- सभी प्राप्त उपादेय शोधपत्रों का प्रकाशन महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका “एकरसा” में किया जायेगा।

परामर्शक-	डॉ. कल्पना	9411248134
	डॉ. महेश कुमार द्विवेदी	9412308402
	डॉ. विजय कुमार शुक्ल	9415812371
	डॉ. अभिषेक कुमार तिवारी	9457728009
	डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय	9451894862
	श्री राजकमल चौहान	8791403035

संगोष्ठी के सभी सत्रों में आप सभी गणमान्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

पंजीकरण लिंक

<https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLScWdoGv2dSviewform?usp=header>

**आयोजनस्थलम्
सत्सङ्गासभागारम्,
श्रीएकरसानन्दादर्शसंस्कृतमहाविद्यालयपरिसरः**

प्राचार्यः- प्रो. रामबदनपाण्डेयः

संयोजकः

डॉ. महेशकुमारद्विवेदी

सहसंयोजकः

डॉ. विजयकुमारशुक्लः